



बाल प्रसंग

जून 2026

राष्ट्रीय बाल भवन

अंक 03



राष्ट्रीय बाल भवन

कोटला मार्ग, नई दिल्ली-110002

बाल प्रसंग



राष्ट्रीय बाल भवन
NATIONAL BAL BHAVAN

विषय सूची

1. निदेशक की कलम से	5
2. बच्चों की स्वरचित कविताएँ - आयु वर्ग 10 से 13 वर्ष	6-11
3. बाल भवन के विज्ञान विभाग की गतिविधियों की एक झलक	12
4. बच्चों की स्वरचित कविताएँ - आयु वर्ग 14 से 16 वर्ष	13-19
5. बाल भवन के प्रदर्शन कला विभाग की गतिविधियों की एक झलक	20
6. पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन - आयु वर्ग 10 से 13 वर्ष	21-26
7. पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन - आयु वर्ग 14 से 16 वर्ष	27-32
8. बाल भवन के शिल्पकला एवं चित्रकला विभाग की गतिविधियों की एक झलक	33
9. बच्चों के लिए अभ्यास कार्य	34
(क) रिक्त स्थान भरो	35-39
(ख) विलोम शब्द	40
(ग) पर्यायवाची शब्द	41
(घ) नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द लिखें।	42
(ङ.) नीचे दिये गये अंकों को शब्दों में लिखें।	43
(च) नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ मिलाएं।	44
10. बच्चों बताओ क्या ...!	45
11. दिमागी क़सरत ... !	46
12. बाल भवन के शारीरिक शिक्षा विभाग की गतिविधियों की एक झलक	47
13. बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक बातें	48
- भारत के राष्ट्रपति का परिचय	49
- भारत के प्रधानमंत्री का परिचय	50
- बच्चों के लिए सीख-एकता में शक्ति है	51



- बच्चों के लिए डायरी लिखना क्यों जरूरी	52
- बच्चों समझो कि दोस्त और दुश्मन कैसे बनते हैं	53
- बैंक की सेवाओं से असंतुष्ट हैं तो कैसे लिखें पत्र	54
14. कर्मचारियों की स्वरचित कविताएं	55-61
15. बच्चों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की एक झलक	62
16. बच्चों के लिए हँसी के फुव्वारे	63
17. बच्चों आओ किलोग्राम को जानें	64
18. नम्बर मिलाओ और रंग भरो	65
19. हरी सब्जियाँ खाने के लाभ	66
20. मापन यंत्र के कार्य को भी जानों/समझो	66
21. विभिन्न स्कूलों से दौरा करने आए बच्चों की खुशियों की एक झलक	67
22. शिष्टाचार की बातें	68
23. आओ जानें किस जीव में कितने दाँत....	69
24. बच्चों एवं अभिभावकों के मुख से	70-72





मार्ग दर्शन

श्रीमती मुक्ता अग्रवाल – निदेशक (राष्ट्रीय बाल भवन)
श्री मुकेश गुप्ता – उपनिदेशक-प्रशासन (राष्ट्रीय बाल भवन)

टीम वर्क

संकलन – सुश्री अनीता राय (क.आशुलिपिक - हिन्दी)
कविताओं के साथ चित्रांकन – मो. अनिरुल इस्लाम (प्रशिक्षक चित्रकला)
डिज़ाईनिंग – श्री नरेन्द्र वर्मा (डी.टी.पी. ऑपरेटर)
फोटोग्राफी – श्री पुनेश तवैर (प्रशिक्षक छायांकन)

प्रस्तुति

हिन्दी अनुभाग

राष्ट्रीय बाल भवन, कोटला मार्ग
नई दिल्ली-110002



निदेशक की कलम से

राष्ट्रीय बाल भवन के हिन्दी अनुभाग द्वारा प्रकाशित 'बाल प्रसंग' के माध्यम से हिन्दी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार, हिन्दी भारत की राजभाषा है। राजभाषा का अर्थ है संविधान द्वारा स्वीकृत सरकारी कामकाज की भाषा। किसी देश का सरकारी कामकाज जिस भाषा में करने का कोई निर्देश संविधान के प्रावधानों द्वारा किया जाता है, वह उस देश की राजभाषा कही जाती है। 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने जनभाषा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हम 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाते हैं। हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिताएँ कराना इसलिए आवश्यक है, जिससे बच्चों एवं कर्मचारियों में विश्वास, आत्म-निर्भरता की प्रवृत्ति तथा मूल्यों के प्रति प्रेम जागृत हो सके और वे राष्ट्र को शक्तिवान व सम्पन्न बनाने में अपना योगदान दे सकें।

इस तृतीय अंक में 'हिन्दी पखवाड़ा 2025' कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय बाल भवन, जवाहर बाल भवन (माण्डी), सदस्य स्कूली बच्चों तथा कर्मचारियों की स्वरचित रचनाओं को शामिल किया गया है। राष्ट्रीय बाल भवन के हिन्दी अनुभाग के इस सराहनीय प्रयास से मुझे बहुत हर्ष हो रहा है।

पिछले वर्ष की 'बाल प्रसंग' पत्रिका के लिए भी अभिभावकों और बच्चों से हमें बहुत अच्छी प्रतिक्रियाएं मिली हैं।

मुझे आशा है कि इस 'संकलन' में प्रकाशित रचनाएं एवं कहानी लेखन भी आपको अवश्य पसन्द आएंगी।

(मुक्ता अग्रवाल)

निदेशक

राष्ट्रीय बाल भवन





आयु वर्ग
10-13 वर्ष

माँ

(प्रथम पुरस्कार)

मेरी माँ है अनमोल,
उनके बिना जीवन है गोल ।
साथ दिया है उसने मेरा जीवन के हर मोड़ पर,
अपने खुद के सपनों और लक्ष्य को छोड़कर ।

न लोभ, न छल, न अभिमान,
उसके मन में बस प्रेम महान ।
सुख-दुख में देती साथ,
जैसी छाया करती राख ।

हँसी बाँटे, आँसू भी ले,
हर मुश्किल में हिम्मत दे ।
सच्चाई उसका है श्रृंगार,
मेरी माँ है सबसे प्यारा उपहार ।



अनम कमाल — न्यू हॉराईज़न स्कूल



बचपन (द्वितीय पुरस्कार)

मेरा बचपन है सबसे प्यारा,
इससे ना कोई मोल लगाना ।
मैंने खेला खूब बहुत,
जितना किसी ने ना खेला ।

मुझसे ना कोई मोल लगाना,
मुझसे ना कोई तोल लगाना ।
मेरा बचपन है सबसे प्यारा,
इससे ना कोई मोल लगाना ।

मैंने खेला कबड्डी, छुपा-छुपी,
पिट्टू, लंगड़ी और पकड़ा-पकड़ी ।
मैंने खेला खूब बहुत,
जितना किसी ने ना खेला ।

मैंने मानी अपने माँ, पापा की बात,
उन्होंने खिलाई मुझे चॉकलेट दिन-रात ।
मेरा बचपन है सबसे प्यारा,
इससे न कोई मोल लगाना ।



आदर्श – जवाहर बाल भवन, माण्डी



बचपन (तृतीय पुरस्कार)

जब हम बच्चे होते हैं,
कोई परेशानी नहीं आती ।
हर जगह हरियाली छाती,
दिल में खुशहाली आती ।
जब हम बच्चे होते हैं,
मन में हमेशा एक विचार आता ।
अगर हम बड़े हो जाएँ,
तो क्या हाहाकार मच जाता ।
आज हम बड़े हो गए,
पर एक ही विचार मन में आता ।
की अगर कुछ जादू हो,
की हम बचपन में वापिस जाएँ ।

कीर्ति शर्मा — बाबू राम हैप्पी स्कूल



माँ

(प्रथम सांत्वना पुरस्कार)

मेरी माँ कितनी अच्छी,
मेरा सब काम है करती ।

जब मैं रोने लगती,
मुझे माँ चुप है करती ।

जब मैं गंदी हो जाती,
माँ मुझे है नहलाती ।

मेरी माँ कितनी अच्छी,
मेरा सब काम है करती ।

सोनाली — जवाहर बाल भवन, माण्डी



माँ

(द्वितीय सांत्वना पुरस्कार)

मेरी माँ मुझे बहुत चीज़ें सिखाती है, मेरी माँ मेरे साथ रहती है।
और मेरी माँ सुबह मुझे नहलाती है, और मुझे स्कूल भी भेजती है।

माँ के बिना कोई जिन्दगी नहीं है, माँ में जो चीज़ है वो किसी में नहीं है।
माँ हमें अच्छे-अच्छे कपड़े दिलाती है, अच्छे खिलौने भी दिलाती है।

माँ की आवाज़ में भी सुबह का उजाला है, उस माँ को अब हम माँम बुलाते हैं।
माँ ने हमें पढ़ना और चलना सिखाया है, इसलिए मैं अपनी माँ के साथ रहना चाहता हूँ।

माँ ने मुझे बहुत अच्छे से पाला है, मेरे लिए माँ ने कोई कमी नहीं रखी है।
माँ ने हमारे लिए सब कुछ किया है, माँ हमारे लिए भगवान है।

मेरी माँ मुझे खाना बनाकर खिलाती है, मेरी माँ मुझे सुबह मंदिर ले जाती है।
मेरी माँ मुझे बहुत अच्छी लगती है, मेरी माँ मुझे बहुत प्यारी लगती है।

सूरज — बाल सहयोग मिडल स्कूल



बील भवन के विज्ञान विभाग की गतिविधियों की एक झलक





आयु वर्ग
14-16 वर्ष

हिन्दी मेरी वाणी

(प्रथम पुरस्कार)

हिन्दी मेरी वाणी है,
सब भाषाओं से न्यारी है।
माँ की ममता सी प्यारी है,
राष्ट्रभाषा ये हमारी है।
महानों की वाणी है हिन्दी,
देवों को प्यारी है हिन्दी।
हर युग की पहचान है हिन्दी,
हम सब का अभिमान है हिन्दी।
मेरी वाणी सबसे न्यारी,
हिन्दी है मातृभाषा हमारी।
कवियों की जान है हिन्दी,
हम सब का अभिमान है हिन्दी।
हिन्दी से तो देश महान,
महानों के रक्त में हिन्दी।
देवों के हर मंत्र में हिन्दी,
राजाओं के राजतंत्र में हिन्दी।
जय हिन्द, जय हिन्दी।



नमन शुक्ला — जवाहर बाल भवन, माण्डी



प्रकृति (द्वितीय पुरस्कार)

प्रकृति ने हमें जीना सिखाया,
है यह प्रकृति की ही मोह-माया ।
चिड़िया ने हमें उड़ना सिखाया,
तितली ने ठिठयाना ।

सूर्य से मिला हमें तेज़,
चंद्रमा से मिली छाया ।
प्रकृति ने हमें जीना सिखाया,
है यह प्रकृति की माया ।

प्रकृति ने हमें जीना सिखाया,
बदले में हमने इसे सिर्फ है,
सताया और सताया ।

वृक्षों व पेड़ों ने दी है हमें,
ऑक्सीजन, फल, दवा, छाया ।
बदले में हमने इसे ही
है काट गिराया ।

वायु ने हमें दी ठंडी हवा और साँस,
बदले में हमने इसे ही
दूषित व बेकार बनाया ।

जल ने हमें क्या प्राकृतिक,
सौंदर्य नहीं दिखाया ।
झरना, नदी, तालाब व समुद्र,
सबको मानव ने नष्ट है करवाया ।

हिमालय से आती है हमारी,
गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र, कावेरी ।
मानव ने नहीं छोड़ा इन्हें भी,
कर दिखाया इनका भी निष्ठान ।

प्रकृति ने हमें जीना सिखाया,
है ये प्रकृति की ही मोहमाया ।
प्रकृति ने हमें जीना सिखाया,
प्रकृति ने हमें जीना सिखाया ।

नसरीन — राष्ट्रीय बाल भवन



प्रकृति (तृतीय पुरस्कार)

हरी-भरी धरती व भारत का सपना,
पेड़-पौधों के बिन, नहीं है जीवन अपना ।
प्रदूषण जब बढ़ने हैं लगता,
जीवन संकट में है पड़ता ।

निजी कठिनाईयों से प्रकृति है मन बहलाती,
फिर चाहे गाँव वाले हों या शहर वाले, सबके दिल लुभाती ।
यही प्रकृति है ईश्वर का स्वर्ग से उपहार,
मनुष्य को रखना होगा इसका ख़ास ख्याल ।

नदियाँ गाँव मधुर तराने,
स्वच्छ हवा सभी को भाएँ ।
आओ मिलकर वचन निभाएँ,
प्रकृति को और हरा बनाएँ ।

आफ़िया अशफ़ाक — राष्ट्रीय बाल भवन



प्रकृति – बारिश का मौसम

(प्रथम सांत्वना पुरस्कार)

भरने लगा है नदियों में पानी दोबारा,
खिलने लगी है अधूरी कलियाँ दोबारा।

पक्षी चहचहा रहे हैं कुछ इस प्रकार,
जैसे आ गया हो कोई त्यौहार।

छम-छम करती आती है बारिश,
हर दिल में उत्साह लाती है बारिश।

धूल उड़ी, आँधी चली,
बादल गरजे और नारियाँ घर को चली।

ये तो है नहीं एक मौसम, पर है एक त्यौहार,
जहाँ घर-घर में होती है, पकवानों की बहार।

रिया – जवाहर बाल भवन, माण्डी



हिन्दी मेरी वाणी

(द्वितीय सांत्वना पुरस्कार)

हिन्दी है भारत की शान,
हर दिल की है यह पहचान ।

माँ की ममता जैसी प्यारी,
सभी भाषाओं से न्यारी ।

जन-जन की आशा हिन्दी,
हम सब की भाषा हिन्दी ।

सादगी का इसमें वास,
बसे इसमें पूरा इतिहास ।

प्रतिभा — जवाहर बाल भवन, माण्डवी



हिन्दी मेरी वाणी (द्वितीय सांत्वना पुरस्कार)

हिन्दी है भारत की शान,
हर दिल की है यह पहचान ।

माँ की ममता जैसी प्यारी,
सभी भाषाओं से यह न्यारी ।

हिन्दी है भारत की शान,
हर दिल की है यह पहचान ।

जन-जन की आशा हिन्दी,
हम सब की भाषा हिन्दी ।

हम सबको इसे अपनाना है,
इसके मान को बढ़ाना है ।

हिन्दी से है देश महान,
हिन्दी ही भारत की शान ।

प्रियांशी – जवाहर बाल भवन, माणडी



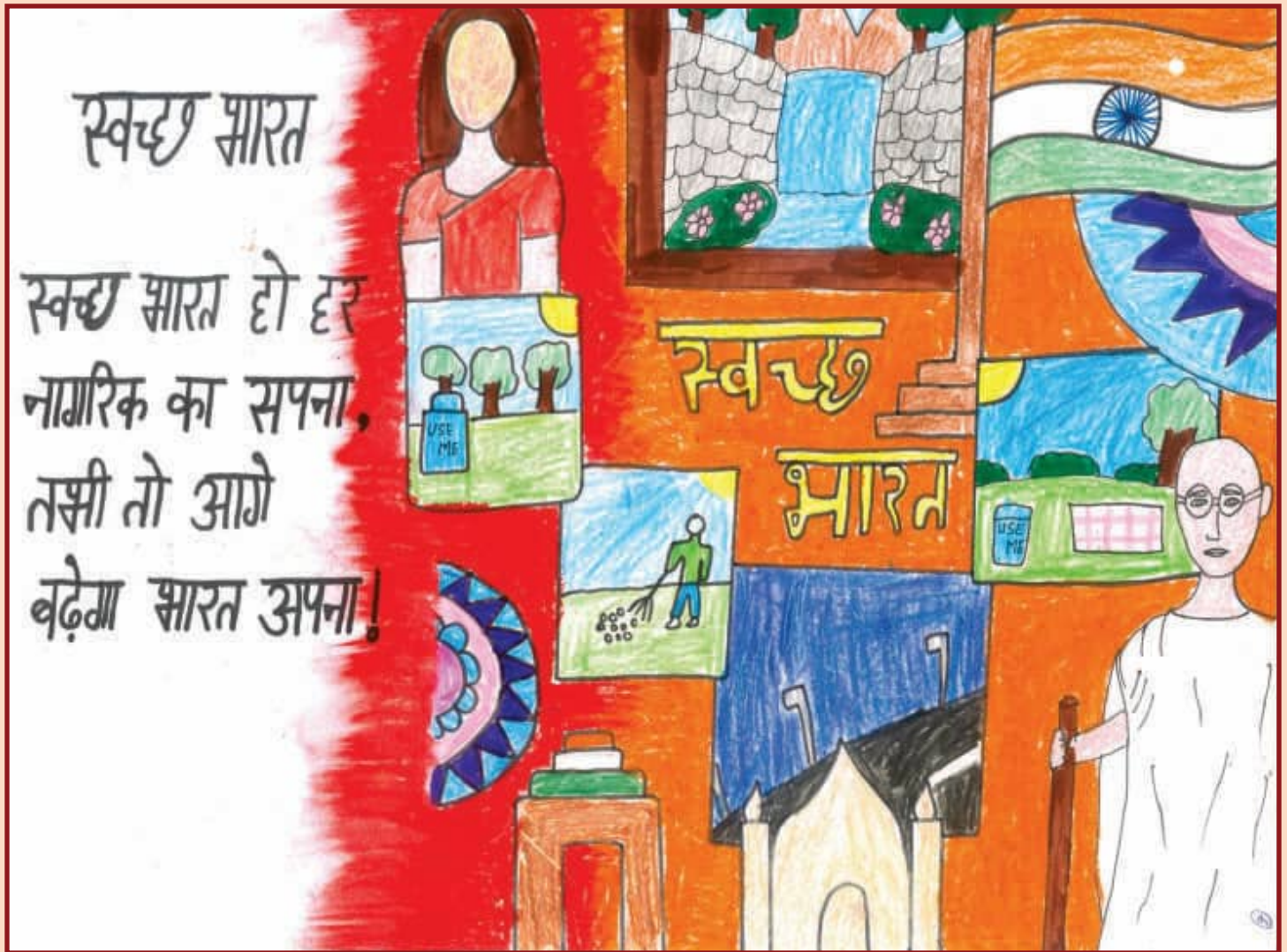
बाल भवन के प्रदर्शन कला विभाग की गतिविधियों की एक झलक





आयु वर्ग
10-13 वर्ष

पुस्तक चित्रांकन एवं स्लोगन



आएशा साजिद - प्रथम पुरस्कार



पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन



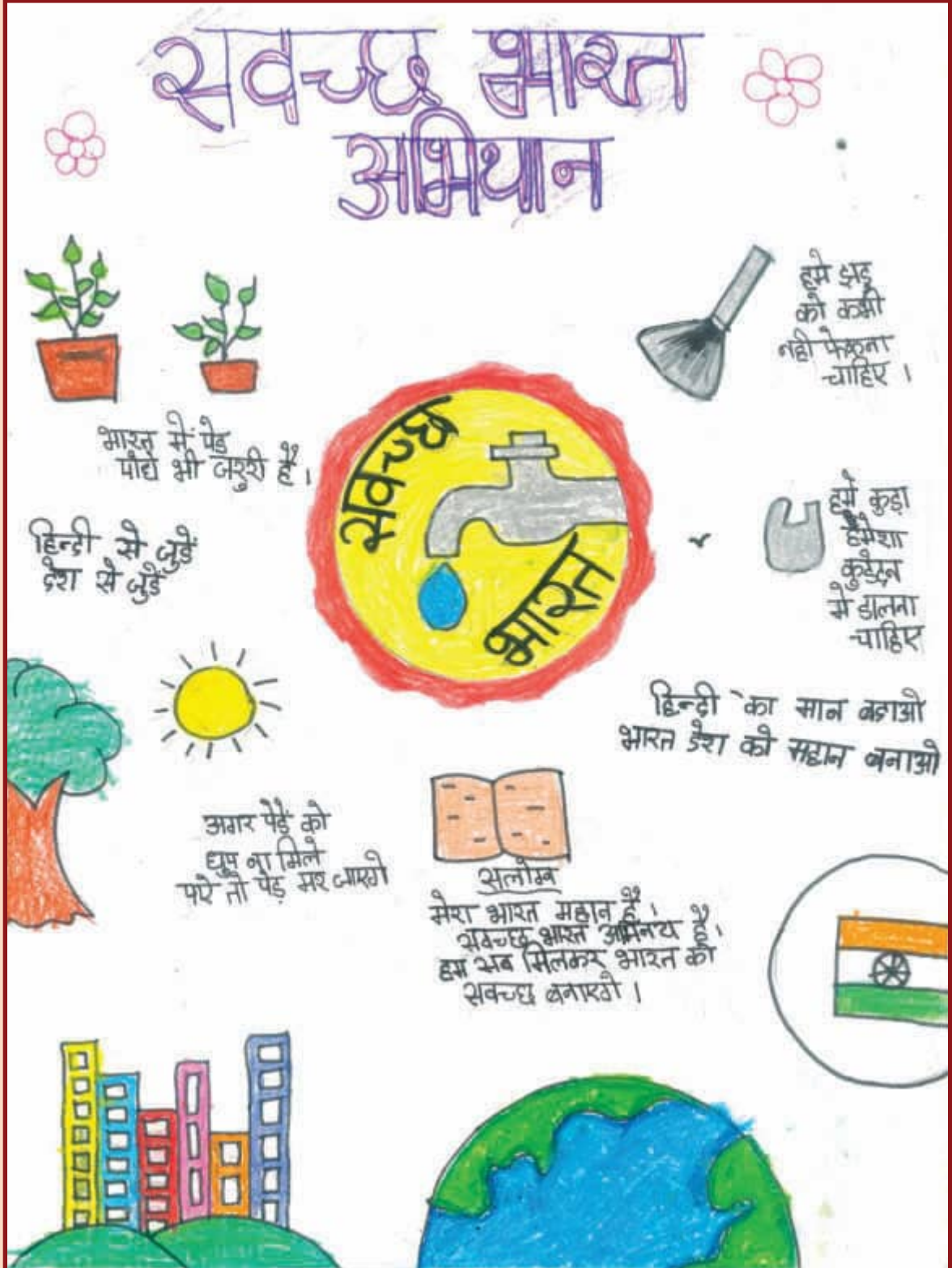
मिष्ठी वर्मा - द्वितीय पुरस्कार

पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन



आध्या शर्मा - तृतीय पुरस्कार

पुस्तक चित्रांकन एवं स्लोगन



वेदिका - प्रथम सात्वना पुरस्कार

पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन



आशु - द्वितीय सांत्वना पुरस्कार





आयु वर्ग
14-16 वर्ष

पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन



अंकुश - प्रथम पुरस्कार

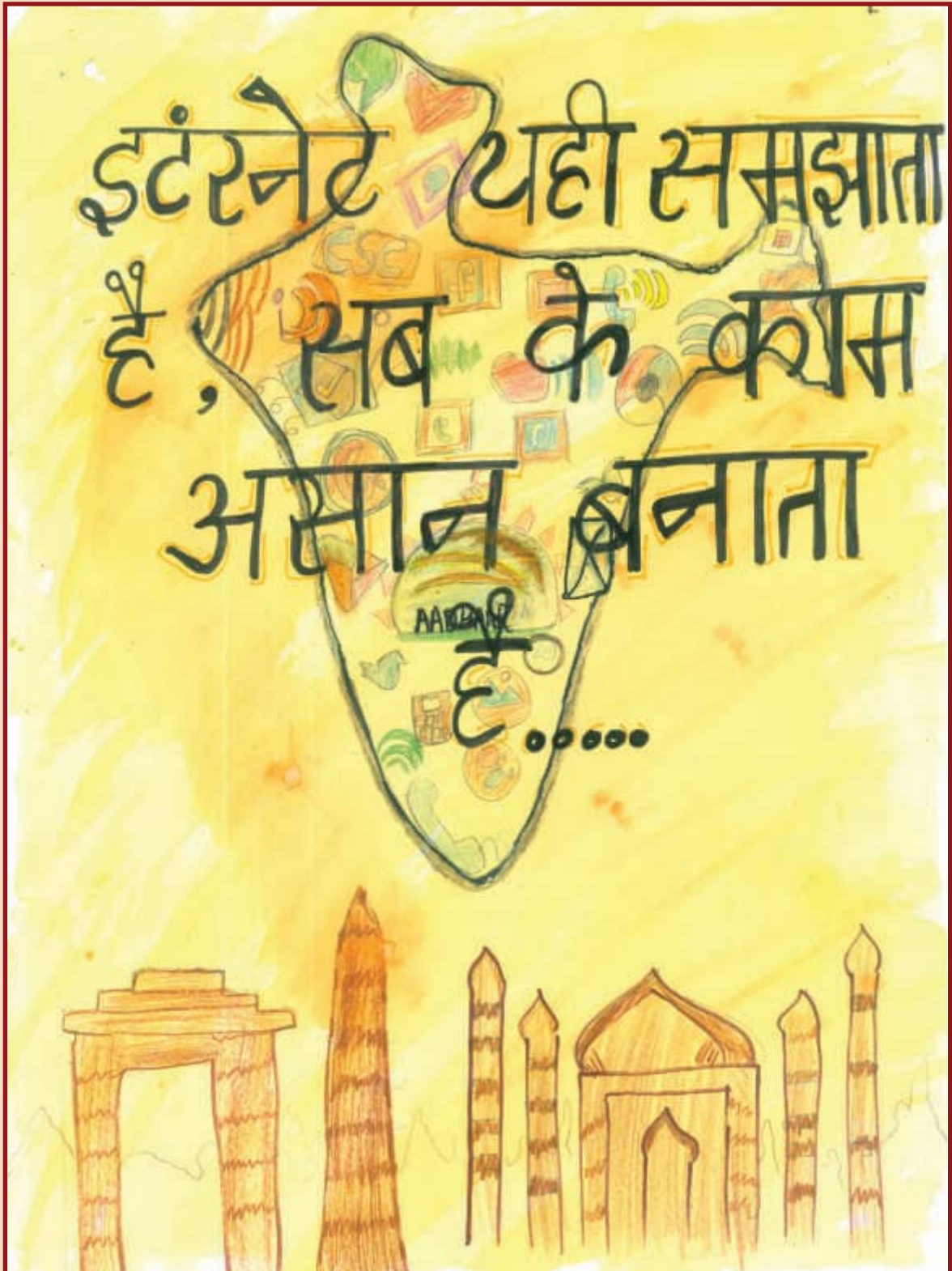


पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन



यशवि - द्वितीय पुरस्कार

पुस्तक चित्रांकन एवं स्लोगन



यासमीन - तृतीय पुरस्कार



पुस्तक चित्रांकन एवं स्लोगन



शायोनी साहा - प्रथम सांत्वना पुरस्कार

पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन



मनु शर्मा - द्वितीय सात्वना पुरस्कार

बाल भवन के शिल्पकला एवं चित्रकला विभाग की गतिविधियों की एक झलक





(क) रिक्त स्थानों के लिए दिए गए शब्दों में से उचित शब्द का चयन करें।

- 1 गणित के जनक _____ हैं।
(आर्किमिडीज, बेंजामिन फ्रैंकलिन, थॉमस अल्वा एडिसन)
- 2 गणित के चार बेसिक जोड़, घटा, गुणा, _____ हैं।
(गिनती, आकार, भाग)
- 3 त्रिभुज में कोणों का योग _____ डिग्री होता है।
(90 डिग्री, 180 डिग्री, 360 डिग्री)
- 4 यदि पैटर्न 5, 8, 11, _____ तो नियम हर बार 3 जोड़ने पर जाएगा।
(12, 14, 16, 20)
- 5 अंग्रेजी वर्णमाला में _____ अक्षर होते हैं।
(20, 16, 26, 32)
- 6 एक सेंटीमीटर में _____ मिलीमीटर होते हैं।
(10 मिमी., 100 मिमी., 1000 मिमी., 50 मिमी.)
- 7 पानी का क्वथनांक (उबलने का तापमान) _____ है।
(200 डिग्री से., 100 डिग्री से., 300 डिग्री से., 500 डिग्री से.)
- 8 मानव शरीर में हड्डियाँ _____ होती हैं।
(202, 250, 450, 206)
- 9 क्षेत्रफल के हिसाब से विश्व का सबसे बड़ा देश _____ है।
(भारत, रूस, अफ्रीका, ब्राजील)
- 10 वयस्कों में _____ दांत होते हैं।
(34, 22, 32, 36)
- 11 किस ग्रह को "लाल ग्रह" के नाम से जाना जाता है।
(शुक्र, ब्रह्स्पति, मंगल, शनि)



- 12 _____ को सुबह का तारा या शाम का तारा कहा जाता है।
(शुक्र ग्रह, नेपच्यून ग्रह, बृहस्पति ग्रह, प्लूटो ग्रह)
- 13 हमारे सौर मंडल का सबसे बड़ा ग्रह _____ है।
(यूरेनस, मंगल, बृहस्पति, प्लूटो)
- 14 वायु मंडलीय दबाव को मापने के लिए _____ उपकरण का उपयोग किया जाता है।
(एनीमोमीटर, थर्मोमीटर, बैरोमीटर, हाइग्रोमीटर)
- 15 हमारे सौर मंडल का सबसे छोटा ग्रह _____ है।
(मंगल, यूरेनियम, बृहस्पति, बुध)
- 16 पृथ्वी पर उपलब्ध सबसे कठोर पदार्थ _____ है।
(हीरा, लोहा, पीतल, चाँदी)
- 17 पृथ्वी के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत _____ है।
(बिजली, सूर्य, मंगल, आग)
- 18 सौर मण्डल में _____ ग्रह होते हैं।
(9, 12, 8, 16)
- 19 बिजली का अविष्कार _____ ने किया था।
(बेंजामिन फ्रैंकलिन, पीटर हेनलेन, बिल गेट्स, पॉल जी. एलन)
- 20 आधुनिक भौतिकी के जनक का नाम _____ है।
(पीटर हेनलेन, अल्बर्ट आइंस्टीन, पॉल जी. एलन, बिल गेट्स)
- 21 विश्व का सबसे बड़ा महासागर _____ है।
(हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, आर्कटिक महासागर)
- 22 विश्व की सबसे लम्बी नदी _____ है।
(नील नदी, अमेज़न नदी, यांगत्ज़ी नदी, मिसि सिपी नदी)



- 23 विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान _____ है।
(गोबी रेगिस्तान, अंटार्कटिका रेगिस्तान, अरब रेगिस्तान, सहारा रेगिस्तान)
- 24 विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत _____ है।
(के 2, कंचन गंगा, माउंट एवरेस्ट, आल्प्स)
- 25 विश्व के सबसे बड़े 'लोकतंत्र' का नाम _____ है।
(जर्मनी, कनाडा, भारत, ऑस्ट्रेलिया)
- 26 विश्व के सबसे बड़े महासागर का नाम _____ है।
(प्रशांत महासागर, अटलांटिक, हिंद, आर्कटिक महासागर)
- 27 दुनिया का सबसे बड़ा पक्षी _____ है।
(जिराफ, बाज़, शुतुरमुर्ग, हंस)
- 28 विश्व में कुल स्वतंत्र देश _____ हैं।
(122, 310, 203, 195)
- 29 विश्व का सबसे ठण्डा देश _____ है।
(स्पेन, यूक्रेन, रूस, मलेशिया)
- 30 विश्व में सबसे ज्यादा आबादी वाला देश _____ है।
(भारत, चीन, ब्राजील, कुवैत)
- 31 भारत में _____ को "गुलाबी शहर" के नाम से जाना जाता है।
(मुंबई, कोलकता, चेन्नई, जयपुर)
- 32 भारत में _____ को राष्ट्रपिता कहा जाता है।
(जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, महात्मा गाँधी, राहुल गाँधी)
- 33 भारतीय राष्ट्रगान _____ ने लिखा था।
(सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गाँधी, रवींद्रनाथ टैगोर, जवाहरलाल नेहरू)



- 34 भारत के प्रथम प्रधानमंत्री _____ थे।
(श्री राजेन्द्र प्रसाद, श्री जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्री सरदार पटेल)
- 35 _____ को 'रेगिस्तान का जहाज' कहा जाता है।
(ऊँट, हाथी, घोड़ा, बैल)
- 36 _____ सेकंड का एक घंटा होता है।
(7200, 3600, 2400, 4800)
- 37 _____ ने भारत के ध्वज का डिज़ाइन किया था।
(पिंगली वेंकैया, वेंकैया रमन, श्री सरदार पटेल)
- 38 भारतीय ध्वज का नाम _____ है।
(पंचशील, सतरंगी, तिरंगा, केसरी)
- 39 भारत के सरीसृप का नाम _____ है।
(शेष नाग, दुमई, किंग कोबरा)
- 40 भारत के राष्ट्रीय वृक्ष का नाम _____ है।
(गुलमोहर, अशोक, बरगद)
- 41 इन्द्रधनुष में _____ रंग होते हैं।
(नौ, सात, बारह)
- 42 एक वर्ष में _____ दिन होते हैं।
(365, 420, 240)
- 43 मेंढक के बच्चे को _____ कहते हैं।
(मेंढकिया, बचवा, टैडपोल)
- 44 चन्द्रमा पर कदम रखने वाले पहले आदमी का नाम _____ है।
(नील आर्मस्ट्रांग, एलन एल बीन, यूजीन ए. सेर्नन)



- 45 भारत की राष्ट्रीय नदी का नाम _____ है।
(कावेरी, गंगा, सरस्वती)
- 46 बर्फ से बने घर को _____ कहते हैं।
(छप्पर, मचान, इग्लू)
- 47 _____ को भारत में मिसाइल मैन के रूप में जाने जाते हैं।
(डॉ.अब्दुल कलाम, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, श्री नरेन्द्र मोदी)
- 48 क्रिकेट टीम में _____ खिलाड़ी होते हैं।
(9, 11, 13)
- 49 भारतीय सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार का नाम _____ है।
(पद्मश्री, भारत रत्न, पद्म विभूषण)
- 50 " माल गुडी डेज़" _____ ने लिखा था।
(डॉ. अब्दुल कलाम, श्री आर. के नारायण, श्री वेंकट रमन, श्री सुभाष चंद्र बोस)

1. आर्किमिडीज 2. आग 3. 180 डिग्री 4. 14 5. 26 6. 10 मिमी. 7. 100 डिग्री सेल्सियस 8. 206 9. रूस
10. 32 11. माल 12. शूक यह 13. वर्तमान 14. बैरोमीटर 15. वर्ष 16. दूरी 17. सूर्य 18. 8
19. बेजानिन फ्रैकलिन 20. अल्बर्ट आइंस्टीन 21. प्रशांत महासागर 22. नील नदी 23. अंटार्कटिका सेमिस्तान
24. माउंट एवरेस्ट 25. भारत 26. प्रशांत महासागर 27. श्वेत्तर्मा 28. 195 29. रूस 30. भारत 31. जयपुर
32. महात्मा गांधी 33. रवींद्रनाथ टैगोर 34. श्री जवाहर लाल नेहरू 35. कूट 36. 3600 37. पिरामिड वैक्यूम 38. तिरंगा
39. किंग कोबरा 40. बरगद 41. सात 42. 365 43. हैडपूल 44. नील आर्मुट्स 45. गंगा 46. डेल्टा
47. डॉ.अब्दुल कलाम 48. 11 49. भारत रत्न 50. श्री आर. के नारायण

क. रिक्त स्थान

उत्तरमाला

(ख) विलोम शब्द

1 अल्पायु	-	_____	11 अग्नि	-	_____
2 अपना	-	_____	12 आरंभ	-	_____
3 अथ	-	_____	13 एक	-	_____
4 अजीब	-	_____	14 कम	-	_____
5 अगला	-	_____	15 आशा	-	_____
6 अंगीकार	-	_____	16 स्वामी	-	_____
7 अल्पसंख्यक	-	_____	17 ईमानदार	-	_____
8 अस्त	-	_____	18 हल्का	-	_____
9 अंधकार	-	_____	19 समझदार	-	_____
10 अघम	-	_____	20 उजाला	-	_____

19. मूर्ख 20. अधोरा

10. उत्तम 11. जल 12. अंत 13. अनेक 14. ज्यार्ता 15. निराशा 16. सेवक 17. बेइमान 18. भारी
1. दीर्घायु 2. पराया 3. इति 4. अनोखा 5. पिछला 6. अस्वीकार 7. बहुसंख्यक 8. उदय 9. प्रकाश

ख. विलोम शब्द

उत्तरमाला

(ग) पर्यायवाची शब्द

1 कमल	-	_____	11 दरिद्र	-	_____
2 दरार	-	_____	12 उत्साह	-	_____
3 चन्द्रमा	-	_____	13 मित्र	-	_____
4 पक्षी	-	_____	14 आवास	-	_____
5 सड़क	-	_____	15 विद्या	-	_____
6 महिला	-	_____	16 बिजली	-	_____
7 कष्ट	-	_____	17 काल	-	_____
8 पृथ्वी	-	_____	18 संसार	-	_____
9 अतिथि	-	_____	19 प्रातः	-	_____
10 बादल	-	_____	20 हाथी	-	_____

ग. पर्यायवाची शब्द
1. पंकज 2. चौर 3. इर्द 4. पंछी 5. मार्ग 6. स्त्री 7. पीडा 8. घरती 9. मेहेमान 10. जलधर 11. रोक 12. उमंग 13. बन्ध 14. घर 15. डोल 16. विद्युत 17. समय 18. जगत 19. सर्वे 20. गज

उत्तरमात्रा

(घ) नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द लिखो।

- | | | | | | |
|----------|---|-------|----------|---|-------|
| 1 मुर्गा | - | _____ | 11 चश्मा | - | _____ |
| 2 मिठाई | - | _____ | 12 गाय | - | _____ |
| 3 कौआ | - | _____ | 13 सूचना | - | _____ |
| 4 रूपया | - | _____ | 14 अमीर | - | _____ |
| 5 नारी | - | _____ | 15 बेटा | - | _____ |
| 6 पंखा | - | _____ | 16 शेर | - | _____ |
| 7 चूहा | - | _____ | 17 खटिया | - | _____ |
| 8 खुशी | - | _____ | 18 गन्ना | - | _____ |
| 9 पक्षी | - | _____ | 19 गेंद | - | _____ |
| 10 गुरु | - | _____ | 20 गोला | - | _____ |

घ. एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द
1. मुर्गा 2. मिठाईयाँ 3. कौए 4. रूपये 5. नारियाँ 6. पंखे 7. चूहे 8. खुशियाँ 9. पक्षीगण 10. गुरुजन
11. चश्मे 12. गायें 13. सूचनाएँ 14. अमीरों 15. बेटे 16. शेर 17. खटियाँ 18. गोलें 19. गेंदें 20. गोलें

उत्तरमात्रा

(ड.) नीचे दिए गए अंकों को शब्दों में लिखें।

1. 6 - _____

2. 9 - _____

3. 18 - _____

4. 21 - _____

5. 27 - _____

6. 36 - _____

7. 39 - _____

8. 43 - _____

9. 49 - _____

10. 53 - _____

11. 59 - _____

12. 66 - _____

13. 75 - _____

14. 85 - _____

15. 87 - _____

16. 88 - _____

17. 93 - _____

18. 95 - _____

19. 98 - _____

20. 100 - _____

(ड.) नीचे दिए गए अंकों को शब्दों में लिखें।
1. छः 2. नौ 3. अठारह 4. इक्कीस 5. सत्तर 6. छत्तीस 7. उनतालीस 8. तैंतालीस 9. उनचास 10. तिरपन 11. उनसठ 12. छियासठ 13. पचहत्तर 14. पचासी 15. सत्तासी 16. अठासी 17. तिरानवे 18. पचानवे 19. अठानवे 20. सौ

उत्तरमात्रा

(च) नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ मिलाएं।

- | | |
|---------------------------------|------------------------------|
| 1. ठन-ठन गोपाल | माफी माँगना। |
| 2. टाल-मटोल करना | बचपन से ही चालाक होना। |
| 3. जी का जंजाल | वादे का पक्का होना। |
| 4. नाक रगड़ना | अभिमानी होना। |
| 5. जैसा देश वैसा भेष | खूब प्रयत्न करना। |
| 6. त्रिशंकु होना | भाग जाना। |
| 7. फूँक-फूँककर पैर रखना | बहुत घमण्ड होना। |
| 8. बात का धनी होना | कंगाल होना। |
| 9. नौ दो ग्यारह होना | परिस्थिति के अनुसार ढल जाना। |
| 10. पेट में दाढ़ी होना | देखें क्या फैसला होगा। |
| 11. जान हथेली पर रखना | व्यर्थ की झंझट। |
| 12. देखें ऊँट किस करवट बैठता है | सावधानी पूर्वक कार्य करना। |
| 13. दिमाग आसमान पर चढ़ना | बहाने बनाना। |
| 14. दौड़-धूप करना | अधर में लटकना। |
| 15. जमीन पर पैर न पड़ना | प्राणों की चिंता न करना। |

1. कंगाल होना 2. बहाने बनाना 3. व्यर्थ की झंझट 4. माफी माँगना 5. परिस्थिति के अनुसार ढल जाना 6. अधर में लटकना 7. सावधानीपूर्वक कार्य करना 8. वादे का पक्का होना 9. भाग जाना 10. बचपन से ही चालाक होना 11. प्राणों की चिंता न करना 12. देखें क्या फैसला होगा 13. बहुत घमण्ड होना 14. खूब प्रयत्न करना 15. अभिमान होना

च. मुहावरों का मिलान

उत्तरमात्रा

बच्चों बताओ क्या ...!

1. गुस्सा करती है पर जान नहीं ... - _____
2. खुद नहाता नहीं सबको नहलाता है ... - _____
3. पेट में आग मुँह में धुआँ ... - _____
4. खुद नहीं हँसता दूसरों को हँसाता ... - _____
5. आँखें हैं पर देखता नहीं ... - _____
6. मुँह है पर बोलता नहीं ... - _____
7. चलता है पर पैर नहीं ... - _____
8. जितनी बढ़ती है उतनी ही घटती है ... - _____
9. पानी में पैदा होता है, पानी में मर जाता है ... - _____
10. खुद खाता नहीं, सबको खिलाता है ... - _____

1. निरु 2. साधन 3. चूँट 4. जोकर 5. गतिरत्न 6. घड़ा 7. पंखा 8. उम 9. नमक 10. चम्मच

उत्तरमाला

दिमागी कसरत ...!

1	12	+	2		=	3	36		4				
				÷			÷			+			
5		-	6		=	7	4		8				
										9	23		
	×			=			=			÷			
10			11	6		12		×	13		=		
											14		
	=												
15	50		16	20	-	17		=	18	11			
				+			×				19	3	
20	84	÷	21		=	22					23	13	
				=			=					=	
			24			25	63	-	26		=	27	

उत्तराणि
2.24 4.13 5.10 6.6 8.144 10.5 12.9 13.4 14.36 17.9 21.12 22.7
24.32 26.24 27.39

बाल भवन के शारीरिक शिक्षा विभाग की गतिविधियों की एक झलक







भारत के माननीय राष्ट्रपति का परिचय

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का जन्म ओडिशा के मयूरभंज जिले के बैदापोसी गाँव में एक संथाल परिवार में 20 जून, 1958 को हुआ था।

वे भारत गणराज्य की 15 वीं वर्तमान राष्ट्रपति के रूप में कार्यरत एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं। प्रबुद्ध सोसाइटी द्वारा श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को प्रबुद्ध महिला सम्राट से अलंकृत किया है। इन्होंने एक अध्यापिका के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन आरम्भ किया। उसके बाद साल 1997 में राइरंगपुर नगर पंचायत के पार्षद चुनाव में जीत दर्ज कर अपने राजनीतिक जीवन का आरंभ किया था।

श्रीमती मुर्मू ओडिशा के मयूरभंज जिले की रायरंगपुर में सन् 2000 और 2009 में विधायक बनीं। सन् 2015 में झारखंड की 9वीं राज्यपाल बनीं। उनको झारखंड उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश वीरेंद्र सिंह ने राज्यपाल पद की शपथ दिलाई थी। उन्होंने सन् 2000 से 2004 के बीच ओडिशा सरकार के मंत्रिमंडल में विभिन्न विभागों में सेवा दी और सन् 2015 से 2021 तक झारखंड के नौवें राज्यपाल के रूप में कार्यभार संभाला। श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने 25 जुलाई 2022 को भारत के राष्ट्रपति का पद सम्भाला।



भारत के माननीय प्रधानमंत्री का परिचय

श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी का जन्म गुजरात के महसाणा जिले के वड़नगर में 17 सितम्बर, 1950 को हुआ था। वे एक साधारण परिवार में जन्मे।

श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी भारत के 14वें और वर्तमान प्रधानमंत्री के रूप में कार्यरत हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ने के बाद उन्होंने सन् 2001 से 2014 तक गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया तत्पश्चात सन् 2014, 2019 और 2024 में भारी बहुमत से प्रधानमंत्री बनें।

उनके नेतृत्व में 'मेक इन इंडिया', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'जन-धन योजना' और 'आयुष्मान भारत' जैसी प्रमुख योजनाएं शुरू हुईं।

श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जी अपनी भाषा कला, तकनीक-प्रेमी, स्वभाव और योग के प्रति लगाव के लिए जाने जाते हैं।

बच्चों के लिए सीख-एकता में शक्ति है।

एक किसान था। उसकी पत्नी बहुत बीमार रहती थी। एक दिन उसकी पत्नी का देहांत हो गया। अब किसान और उसके चार बेटे थे। किसान बहुत मेहनती था। खेती-बाड़ी के साथ-साथ वह अपने चारों बेटों का पालन-पोषण करता था। जैसे-तैसे दिन बीतते गए। किसान अब बूढ़ा हो चला था। उसके बेटे अक्सर आपस में झगड़ते रहते थे। यह सब देख कर बूढ़ा किसान बहुत चिंतित रहता था कि मेरे बाद इन सबका क्या होगा ये सब आपस में ही लड़-लड़कर मर जाएंगे।

एक बार बूढ़ा किसान बीमार पड़ गया। जब वह अपनी मृत्यु-शय्या पर लेटा था तो वह अपने बेटों के झगड़े के कारण दुखी और चिंतित महसूस कर रहा था। वह उन्हें सबक सिखाना चाहता था। उसने अपने बेटों को बुलाया। किसान ने सबसे बड़े बेटे से लकड़ी की एक गठरी लाने को कहा। बूढ़े किसान ने उस लकड़ी की गठरी से एक लकड़ी निकाल कर दूसरे बेटे को देते हुए कहा कि इसे तोड़ दो। दूसरे बेटे ने वह एक लकड़ी तोड़ दी। फिर बूढ़े किसान ने तीसरे बेटे से कहा कि गठरी में बंधी इन सभी लकड़ियों को एक साथ तोड़ दो। जब तीसरे बेटे ने गठरी में बंधी सभी लकड़ियों को एक साथ तोड़ना चाहा तो वह नहीं टूटीं। यह देख किसान ने चारों बेटों को समझाते हुए कहा कि गठरी की लकड़ी को एक-एक करके तोड़ा जा सकता है अगर एकजुट रहोगे तो कोई तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा। इस लाठी के बण्डल की तरह तुम सब मजबूत रहोगे।

नोट :- यह कहानी हमें बताती है एकता में बल है। अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जीने की ओर प्रेरित करती है।



बच्चों के लिए डायरी लिखना क्यों जरूरी

डायरी लिखना हमें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक अच्छा अवसर देती है। हमें अपनी डायरी में अपने सुखद अनुभवों का वर्णन करने में बहुत खुशी मिलती है। अपने दुखी अनुभवों का वर्णन करने से हमें बड़ी राहत मिलती है। अगर हमने कुछ गलत किया है, तो हम उसे लिखने में संकोच करते हैं। लेकिन इसकी अच्छी बात यह है कि हम अपने भविष्य में दोहराना पसंद नहीं करते हैं।

हमारे पिछले दिनों का एक व्यवस्थित खाता फिर से देखने के लिए एक डायरी हमारे लिए बहुत मददगार है। यह हमें शांत और विचारशील बनाता है। हमने जो देखा है उसका लेखा-जोखा लिखने की हमारी शक्ति में सुधार करता है। यदि हमारे पास एक डायरी है, तो हम विभिन्न स्थानों और व्यक्तित्वों की अपनी यात्राओं के विवरण को नहीं भूल सकते। डायरी हमारे अपने समय का आईना है। लेकिन डायरी के अपने नुकसान भी हैं। यदि यह खो जाती है और किसी ऐसे व्यक्ति को मिलती है जो हमारे लिए शत्रुतापूर्ण भावना रखता हो, तो हमारी डायरी हमारे लिए कई प्रकार के खतरों उत्पन्न कर सकती है।

नोट :- डायरी लिखने की आदत हमें पुरानी बातों को भूलने से रोकती है। यह आदत बीती बातें अथवा व्यक्ति को याद रखने का एक अच्छा रास्ता है।



बच्चों समझो कि दोस्त और दुश्मन कैसे बनते हैं

1 को 2 मिले और वह 3 पर चला गया ($1+2=3$)

3 ने 2 से लड़ाई की और 1 पर आ गया ($3-2=1$)

1 को 3 मिले और वह 4 पर चला गया ($1+3=4$)

4 ने 3 से लड़ाई की और 1 पर आ गया ($4-3=1$)

1 को 4 मिले और वह 5 पर चला गया ($1+4=5$)

5 ने 4 से लड़ाई की और 1 पर आ गया ($5-4=1$)

1 को 5 मिले और वह 6 पर चला गया ($1+5=6$)

6 ने 5 से लड़ाई की और 1 पर आ गया ($6-5=1$)

6 को 1 मिला और वह 7 पर चला गया ($1+6=7$)

7 ने 6 से लड़ाई की और 1 पर आ गया ($7-6=1$)

7 को 1 मिला और वह 8 पर चला गया ($1+7=8$)

8 ने 7 से लड़ाई की और 1 पर आ गया ($8-7=1$)

8 को 1 मिला और वह 9 पर चला गया ($1+8=9$)

9 ने 8 से लड़ाई की और 1 पर आ गया ($9-8=1$)

9 को 1 मिला और वह 10 पर चला गया ($1+9=10$)

10 ने 9 से लड़ाई की और 1 पर आ गया ($10-9=1$)

नोट :- यह कविता दर्शाती है कि किसी से लड़ना नहीं चाहिए, लड़ने वाला हमेशा परेशान रहता है और ना लड़ने वाला हमेशा खुश रहता है।



बैंक की सेवाओं से असंतुष्ट हैं तो कैसे लिखें पत्र

सेवा में,

प्रबंधक साहब,

नई दिल्ली।

नमस्कार महोदय/महोदया,

मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि आपके बैंक की सेवा दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही है। पूछताछ का जवाब देने के लिए कोई रिसेप्शनिस्ट नहीं है और कैशियर भी ठीक ढंग से पेश नहीं आते हैं। यदि वे अपने ग्राहकों को संतुष्ट नहीं करते हैं तो उन्हें नौकरियों में रहने का कोई अधिकार नहीं है।

कृपया एक जनसंपर्क अधिकारी नियुक्त करें जो कर्मचारियों और ग्राहकों के बीच सद्भावना बनाए रखें। यदि आप इन उपायों को गंभीरता से लेते हैं तो बहुत संख्या में लोग अपना खाता आपके बैंक में खुलवाएंगे जिससे आपके बैंक का नाम पूरी दुनिया में गूजेगा और आगे भी आपके बैंक को बहुत फायदा होगा।

धन्यवाद।

भवदीय

हस्ताक्षर _____

नाम _____

खाता संख्या _____





हिन्दी हमारी है पहचान

(प्रथम पुरस्कार)

इक दिन मेरी बिटिया ने यूँ कहा मुझे नादानी से
"माँ। शिक्षक ने बोला है हिन्दी की किसी कहानी से
सब बच्चे कल चार पंक्तियाँ, कर कंठस्थ, सुनाएँगे
कल मेरे विद्यालय में 'हिन्दी पकवान' मनाएँगे।

उसके इस मासूम वचन से मैं पुलकित होकर बोली,
"पखवाड़ा पकवान बताती, हो तुम भी कितनी भोली,
किन्तु, गर्व है तुम पर, हिन्दी का इक नया शब्द सीखा"
बिटिया ने कुछ सोचा और फिर एक प्रश्न मुझसे पूछा।

"क्या है हिन्दी ? माँ! क्यों सब हिन्दी की बातें करते हैं?

हिन्दी पढ़ो, पढ़ाओ हिन्दी, हिन्दी का दम भरते हैं,
इतना भी क्या? मात्र एक भाषा ही तो है भारत की,
हिन्दी का सम्मान करें, है क्यों अभिलाषा भारत की?

"आओ तुम्हें सुनाती हूँ मैं आज कहानी हिन्दी की,
तुम भी जानो तुम भी समझो कथा सुहानी हिन्दी की,
हिन्दी में ही अभिव्यक्ति है हर इक भाव की, मानो तुम,
हिन्दी के स्वर और व्यंजन में योग छुपा है जानो तुम।"

"है पर्याय अनेकों इसमें, अलंकार से लदी हुई,
गद्य-पद्य की खान है हिन्दी, कथा-कहानी सजी हुई,
संधि और विच्छेद अनोखे, प्रत्यय और उपसर्ग भरी,
माँ की गोदी जैसी हिन्दी, ममता और वात्सल्य भरी।"

"प्राकृत से संस्कृत थी जन्मी, और तमिल भी आई थी,
संस्कृत से उद्गम हिन्दी का, प्रायद्वीप पर छाई थी,
बस भाषा की बात नहीं यह परम्परा की धारा है,
चिरंजीवी बरगद सी हिन्दी, कालजयी, आधार है।

यही संस्कृति है हम सबकी, यही हमारा मान है,
हिन्दी है प्रारब्ध हमारी, हिन्दी ही पहचान है,



जैसे मैं तेरी माता! हिन्दी भारत की माता है,
क्यों न हो अभिमान उसे वो जो हिन्दी का ज्ञाता है।

हिन्दी में सभ्यता निहित है, हिन्दी इक संस्कार है,
कई प्रातों की कई बोलियाँ, हिन्दी का ही प्रकार है,
किन्तु हिन्दी की यात्रा भी बहुत कठिन थी, दुर्गम थी,
हुए अनेकों हमले इसपर, दुनिया कटु थी, निर्भय थी।

मुगलों ने अपभ्रंश किया हिन्दी का इसको भटकाया,
फिर अंग्रेज़ तो हिन्दी की हत्या करता न शर्माया,
हीन भावना, उपदृष्टि से हिन्दी को देखा जाता,
जो अंग्रेजी बोले वो सर्वज्ञ सुज्ञानी कहलाता।

इस आचार ने भारत की आत्मा पे था आघात किया,
परवशता की चाल चली और जनता को लाचार किया,
अब जाकर समझे हैं हम अपनी स्वतंत्रता का आशय,
अपनी भाषा को ठुकराकर पतन हमारा है निश्चय।

जैसे हम अपनी माता को सर्वोपरि समझते हैं,
अपनी भाषा हिन्दी को भी सर आँखों पर रखते हैं,
'मून मिशन' और 'चंद्रयान' और सन भी अब 'आदित्य' हुआ,
'गूगल' पर भी अब हिन्दी भाषा का दीपक दीप्त हुआ।

नई पुस्तकों को भी देखो नाम सभी हैं हिन्दी में
'यू एन' में भाषण हिन्दी में, राजपत्र भी हिन्दी में,
अब शांति भी हिन्दी में है और 'युद्ध' भी हिन्दी में,
यह उर की भाषा है अपनी, रात्रि स्वप्न भी हिन्दी में।

तुम भी करो प्रयत्न यही हिन्दी में ही नित बात करो,
भाषाएँ सीखो और भी, पर हिन्दी को माथ करो,
सीखो दोहे, लोकोक्तियाँ, और मुहावरे जानो तुम,
मम्मी-वम्मी छोड़ किनारे, 'माँ' ही मुझे पुकारो तुम।

राजभाषा यही हमारी, हिन्दी ही पहचान है,
हिन्दी आदि-अंत हमारा, हिन्दी पर अभिमान है।

श्रीमती नेहा वत्स खंकरियाल (राष्ट्रीय बाल भवन)



प्रकृति का संरक्षण

(द्वितीय पुरस्कार)

प्रकृति का महत्व मनुष्य को कैसे समझाएं,

ये है जीवन का आधार कैसे बतलाएं।

काटे जा रहे हैं पेड़ और पौधे अनेकों,

फिर एक हरा-भरा संसार कैसे बसाएं।

पानी की बर्बादी और उसे दूषित न करो,

यदि नहीं माने तो फिर उसका बुरा परिणाम इसी जन्म भरो।

डाली पर बैठे पक्षी, समुद्र के अद्भुत जीव सबका जीवन है संकट में,

एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण की अपेक्षा रखना है हर एक नागरिक के हक में।

हवा प्रदूषण से स्वच्छ श्वास ना आए, जल प्रदूषण से ढेरों बिमारियां घर में लाएं,

मृदा प्रदूषण से हमारे किसान भला फसल को स्वस्थ कैसे बनाएं।

गाय जिसे हम भारतीय कहते हैं माता, वह प्लास्टिक ग्रहण कर,

कुपोषण से अनगिनत संख्या में प्रतिदिन अपने प्राण गवाएं।

फिर भी क्यों न हम छोटे-छोटे कदमों से प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण को जड़ से मिटाएं,

बाढ़, भूकम्प और सूखा पड़ जाना जैसी आपदा से हम कब तक लड़ पाएंगे।

क्या हम आने वाली पीढ़ी के कोमल हाथों में एक स्वच्छ और स्वस्थ संसार छोड़कर जाएंगे,

हमारे पूर्वजों ने जो एक हरा-भरा संसार संजोया था, उसके संरक्षण की जिम्मेदारी

क्या हम नहीं निभा पाएंगे।

हरी ऊर्जा के महत्व को जब हम जन-जन तक पहुँचाएंगे,

तभी तो वर्तमान की समस्या का समाधान वर्तमान के सुझावों से ही पाएंगे।

केवल वोट डालने से, एक व्यक्ति जागरूक नागरिक नहीं कहलाता, "एक पेड़ माँ के नाम" जैसे,

भारत सरकार के प्रारंभिक प्रयासों में बढ़-चढ़कर, भाग लेना ही सकारात्मक बदलाव है लाता।

हमारे भारत के संविधान की नींव, "अनेकता में एकता" को फिर से उजागर करेंगे,

"प्रकृति के संरक्षण के लिए हम सब भारत के निवासी एक जुट होकर

पर्यावरण के दुश्मनों को पराजित करेंगे।



सुश्री जैसमीन (राष्ट्रीय बाल भवन)

हिन्दी हमारी पहचान है

(तृतीय पुरस्कार)

देवों कि भाषा देवनागरी कि संतान है
इतनी मीठी, इतनी मधुर, इतनी महान है,
हिन्दुस्तानी हैं हम, हिन्दी हमारी पहचान है।
कहीं सुंदर मुहावरे, कहीं लोकोक्ति
तो कहीं दोहों की बोली,
इतने रंग हैं इस भाषा में कि जैसे होली।
'निराला', 'जयशंकर' और 'प्रेमचंद' ने
निरंतर बढ़ाई इसकी आन है,
हिन्दुस्तानी हैं हम, हिन्दी हमारी पहचान है।
समृद्ध व्याकरण का ज्ञान भरा है
इस भाषा में भारत का इतिहास गढ़ा है,
अनेक बोलियों की जननी है,
इसपर हमको मान बड़ा है।
'माँ' कहते हैं इसको
और 'माँ' तो सबसे महान है,
हिन्दुस्तानी हैं हम, हिन्दी हमारी पहचान है।
इससे नाता तो बचपन से ही जुड़ता है,
जब एक नन्हा बालक 'माँ' कहता है।
फिर कैसा समय है, विधि का कैसा विधान है,
कि हो रहा इस माँ का घोर अपमान है।
क्यों भूलते जा रहे युवा कि,
हिन्दुस्तानी हैं हम और हिन्दी हमारी पहचान है।
भारत में रहकर यह कैसी विचित्र परंपरा है



कि लोगों में अंग्रेजी का अहंकार भरा है।
आज़ादी के बाद भी अंग्रेजी को बोझ तले,
भारत का सीना दबा पड़ा है।
हिन्दी भाषी तो प्रकांड भी अनपढ़,
और अंग्रेजी जो बोले वो मूर्ख भी महान है।
सच भूल गए हैं हम, कि हिन्दुस्तानी हैं हम,
और हिन्दी हमारी पहचान है।
भूल चुके हैं संस्कृति, भूल गए हैं सभ्यता,
'नमस्कार' और 'चरण स्पर्श' तो हो गया 'हैलो-हाय'
आजकल तो हिन्दी दिवस पर भी
'हैप्पी हिन्दी डे' लिखने का अनोखा प्रावधान है।
अपनी भाषा अपना गौरव है,
अमृत है, अमूल्य धरोहर है।
इसको अपनाने में कैसा संकोच, कैसा अपमान है,
हिन्दुस्तानी हैं हम, हिन्दी हमारी पहचान है।
कहीं ऐसा न हो कि खो दें अपना गौरव
खो दें अपनी भाषा, हाथ में रह जाए केवल दुःख और निराशा,
आओ मिलकर शपथ लें, हिन्दी को पुनः सम्मान दिलाएंगे,
बाल, युवा, वृद्ध सब इसको फिर अपनाएंगे।
इस अमूल्य रत्न को विश्व नए शिखर पर ले जाएंगे,
पूरे विश्व में गर्व से कहेंगे, ये 'माँ' है अपनी।
ये ही हमारी आन-बान और शान है,
हिन्दुस्तानी हैं हम, हिन्दी हमारी पहचान है।-2

सुश्री करुणा कुमारी (राष्ट्रीय बाल भवन)

प्रकृति का संरक्षण

(प्रथम सांत्वना पुरस्कार)

पुकारती है ये धरा, मुस्कुराती है ये धरती,
अनन्य प्रेम और सौंदर्य से भरी है ये प्रकृति ।
कहीं ताल-तलैया, कहीं नहर तो कहीं ऊँचे पहाड़,
कहीं पत्तियों का कलख और कहीं शेरों की दहाड़ ।

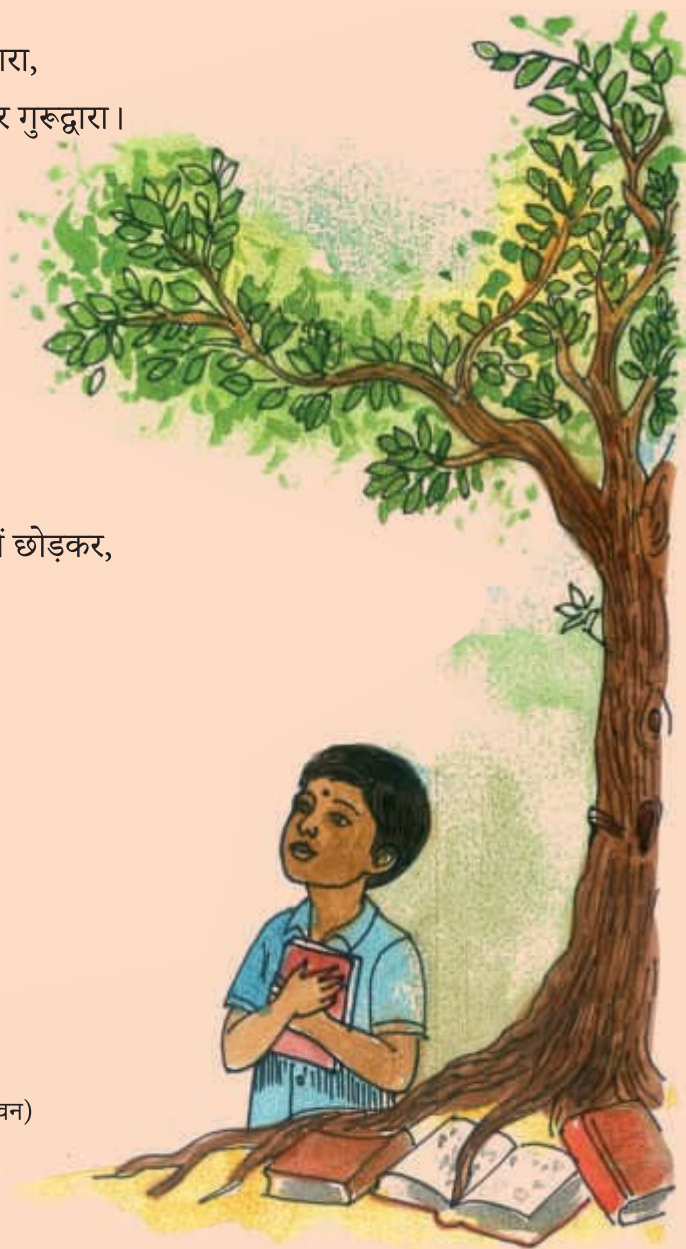
जब से मैंने चलना सीखा इस धरती ने दिया सहारा,
इस धरती पर ही तो था मेरा मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारा ।
जब-जब कोई आवश्यकता पड़ी मुझे,
मैंने इस प्रकृति को ही तो है पुकारा ।

पेड़, फूल और फल हो, या फिर हो जीवन जैसा पानी,
इस प्रकृति से ही तो है मानव तेरे जीवन की कहानी ।
फिर मानव का ये कैसा लालच प्रकृति को नष्ट,
जब-तब करता अपनी ही मानमानी ।

पेड़ काटकर, धड़ तोड़कर प्रकृति को बूरे हाल में छोड़कर,
ना जाने तू क्या पाएगा याद रख तेरा किया,
बाढ़, चक्रवात सा अपना बन
तेरे आगे ही आएगा ।

अब भी समय है सुधर जाओ,
प्रकृति के संरक्षण कि सौगंध उठाओ ।
पेड़ लगाओ, बाग खिलाओ,
इस धरा को पुनः सुंदर बनाओ ।

श्री गोविन्द (राष्ट्रीय बाल भवन)



हिन्दी है हमारी पहचान

मैं भारत का वासी हूँ, हिन्दी मेरी जान है,
हिन्दी मेरी शान है, हिन्दी हमारी पहचान है।

जब आँखें हिन्दी पढ़ती हैं, चेहरे आती मुस्कान है,
हिन्दी ने पढ़ना सिखलाया, हिन्दी हमारी पहचान है।

कोमल, सरल, मधुर, मोहक, सब भाषाओं की जान है,
मेरी आत्मा हिन्दी में है, हिन्दी हमारी पहचान है।

रोना-हंसना, सुख-दुख का, भावों का करती बखान है,
मेरी आत्मा हिन्दी में है, हिन्दी हमारी पहचान है।

भारत के कोने-कोने में, हिन्दी विराजमान है,
हिन्दी हिंदू की शान है, हिन्दी हमारी पहचान है।

'ह' से हिन्दी 'ह' से हम, 'ह' से हिन्दुस्तान है,
मेरी आत्मा हिन्दी में है, हिन्दी हमारी पहचान है।

भावों को व्यक्त करने में, हिन्दी लगती आसान है,
मेरी आत्मा हिन्दी में है, हिन्दी हमारी पहचान है।

हिन्दी में लोरी सुनी मैंने, हिन्दी में मेरे प्राण हैं,
मेरी आत्मा हिन्दी में है, हिन्दी हमारी पहचान है।

मन में हिन्दी को लेकर, जागा इक अरमान है,
मेरी आत्मा हिन्दी में है, हिन्दी हमारी पहचान है।

भारत के कोने-कोने तक, हिन्दी का गुणगान है,
हिन्दी मेरा अभिमान है, हिन्दी हमारी पहचान है।



श्री राहुल (राष्ट्रीय बाल भवन)

बच्चों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की एक झलक



बच्चों के लिए हँसी के फुव्वारे

- 1 रोगी – डॉक्टर साहब मैं गरीब आदमी हूँ आपकी फीस नहीं दे सकता, अगर आपने मेरा इलाज मुफ्त में कर दिया तो कभी मैं आपका काम मुफ्त में कर दूँगा।
डॉक्टर – तुम क्या करते हो ?
रोगी – मैं शमशान में लाश जलाता हूँ।
- 2 चिंटू (डॉक्टर से) – दूध पीने से रंग गोरा होता है।
डॉक्टर – हां होता है।
चिंटू – झूठ, फिर भैंस का बच्चा काला क्यों होता है।
- 3 मैडम – क्लास में जो बेवकूफ हो वो खड़ा हो जाए।
पप्पू – मासूमियत से खड़ा हो गया।
मैडम – क्या तुम बेवकूफ हो ?
पप्पू – नहीं मैडम आप अकेली खड़ी थीं इसलिए मुझे अच्छा नहीं लगा।
- 4 एक मास्टर जी रेस्तरां में खाली कटोरी में रोटी डुबो-डुबो कर खा रहे थे।
वेटर ने पूछा 'मास्टर जी खाली कटोरी में कैसे खा रहे हैं ?'
मास्टर जी बोले, 'हम गणित के मास्टर हैं, हमने 'मान लिया' है कि कटोरी में दाल है।
- 5 लड़का – मैं तुम से शादी नहीं कर सकता।
मेरे घर वाले नहीं मान रहे।
लड़की – तुम्हारे घर में कौन-कौन है ?
लड़का – एक पत्नी और दो बच्चे।
- 6 आज चाय बनाते वक्त तुम्हारी याद आ गई,
फिर अदरक को बहुत कूटा मैंने।
- 7 अंग्रेज को मच्छर काट रहे थे, उसने सारी लाईट बंद कर दी।
तभी कमरे में एक जुगनू आ गया।
अंग्रेज – ओह माई गोड..... इण्डिया का मच्छर कितना एडवांस है, टार्च लेकर ढूँढ रहा है।
- 8 एक दिन सर ने एक बच्चे से पूछा स्कूल क्या है ?
बच्चा – स्कूल वो जगह है जहाँ पर हमारे पापा को लूटा जाता है और हमें कूटा जाता है।
- 9 प्लेट फार्म पर टीटी ने पप्पू से टिकट मांगा
पप्पू – लेकिन मैं तो ट्रेन से आया ही नहीं
टीटी – अच्छा क्या सबूत है ?
पप्पू – सबूत ये है कि मेरे पास टिकट ही नहीं है।
- 10 डॉक्टर – बताइए आपके ये तीन दाँत कैसे टूट गए ?
मरीज – पत्नी ने कड़क रोटी बनाई थी।
डॉक्टर – खाने से मना कर देते।
मरीज – यही तो किया था।
- 11 खरीदने को तो मैं हवाई जहाज भी खरीद लूँ पर रिश्तेदार ताना मारेगे कि घर के ऊपर से निकले और मिलकर भी नहीं गया।

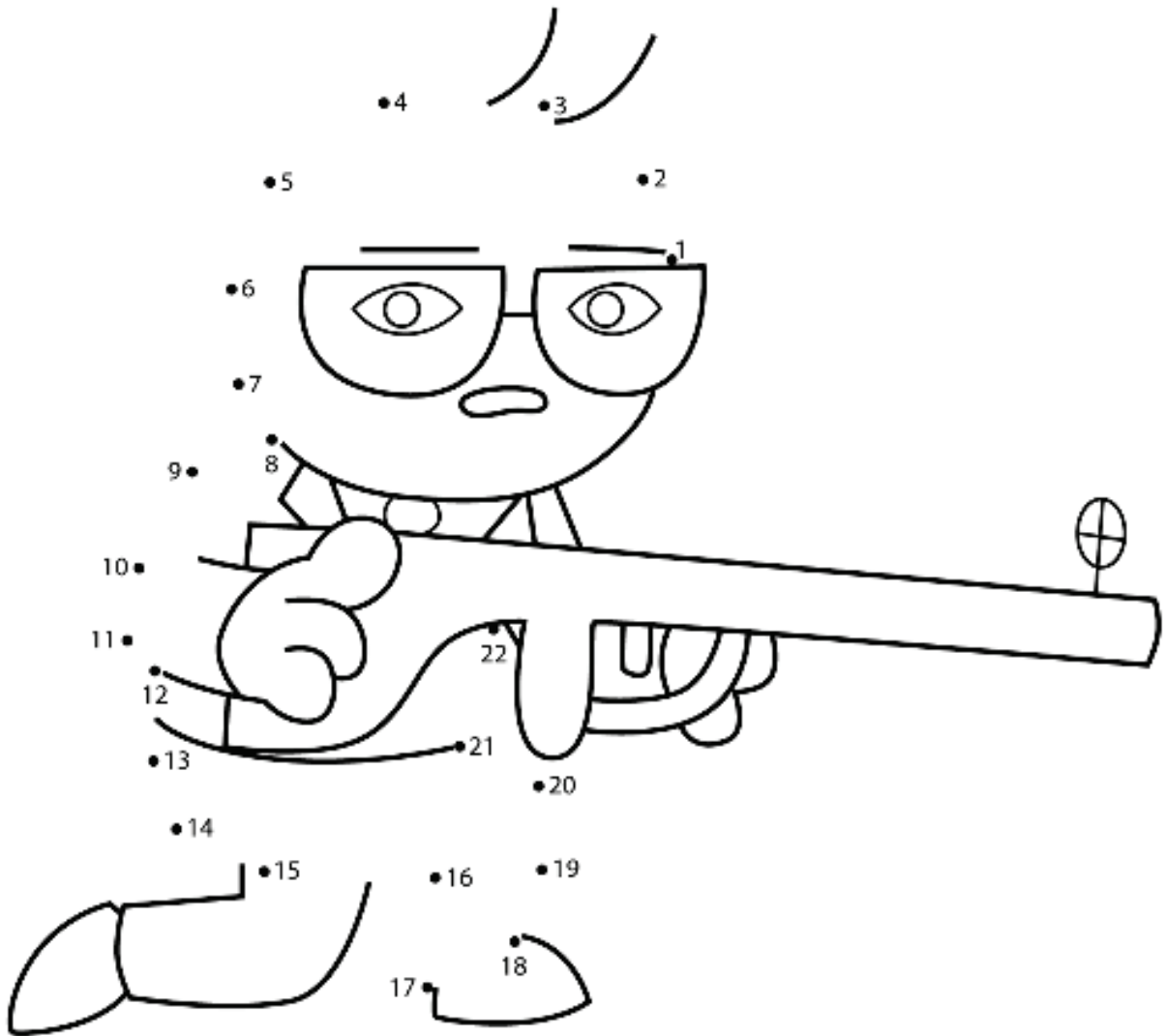


बच्चों आओ किलोग्राम को जानें

एक किलोग्राम में	-	1000 ग्राम होते हैं।
आधा किलो में	-	500 ग्राम
एक पाव में	-	250 ग्राम
तीन पाव में	-	750 ग्राम
सवा किलो में	-	1 किलोग्राम 250 ग्राम
पौने किलो में	-	750 ग्राम
दो किलो में	-	2000 ग्राम
डेढ़ किलो में	-	1500 ग्राम (1 किलोग्राम 500 ग्राम)
सवा दो किलो में	-	2250 ग्राम (2 किलोग्राम 250 ग्राम)
पौने दो किलो में	-	1750 ग्राम (1 किलोग्राम 750 ग्राम)



नम्बर मिलाओ और रंग भरो



बच्चों के लिए पाँच हरी सब्जियाँ खाने के लाभ

- घीया - यह पचने में हल्की और फाइबर से भरपूर होती है।
- तोरई - यह आसानी से पचती है और इसकी तासीर ठंडी होती है।
- पालक - इसमें भरपूर फाइबर होता है जो कब्ज में राहत देता है।
- कद्दु - यह सूजन और जलन को कम करने में मदद करता है।
- मेथी - यह कोलेस्ट्रॉल कम करती है और रक्त के स्तर को नियंत्रित करती है।

मापन यंत्र के कार्य को भी जानें/समझें

- 1 थर्मामीटर - तापमान मापने के लिए
- 2 बैरोमीटर - वायुदाब मापने के लिए
- 3 मेनोमीटर - गैसों की दाब मापने के लिए
- 4 डेसिबल - ध्वनि की तीव्रता मापने के लिए
- 5 एनिमोमीटर - वायु की गति मापने के लिए
- 6 सोलरमीटर - सूर्य से आने वाली ऊर्जा मापने के लिए
- 7 स्पीडोमीटर - वाहन की गति मापने के लिए
- 8 लैक्टोमीटर - दूध में जल की शुद्धता मापने के लिए
- 9 फ्लोमीटर - किसी तरह प्रवाह दर को मापने के लिए
- 10 सिस्मोग्राफ - भूकंप की तीव्रता मापने के लिए



विभिन्न स्कूलों से दौरा करने आए बच्चों की खुशियों की एक झलक



शिष्टाचार की बातें

शिष्टाचार अर्थात शिष्ट + आचार - इसका अर्थ है सभ्यतापूर्ण आचरण और दूसरों के प्रति आदर भाव रखना। यह हमारे अच्छे संस्कार और बेहतरीन चरित्र को दर्शाता है। शिष्टाचार हमें समाज में लोकप्रिय बनाता है और रिश्तों को मजबूत करता है। शिष्टाचार के प्रमुख बिन्दु निम्न प्रकार से हैं;----

- विनम्र अभिवादन: किसी से मिलने पर हमेशा चेहरे पर हल्की मुस्कान रखते हुए 'नमस्ते', 'नमस्कार' या 'शुभ प्रभात' कहना।
- शिष्ट भाषा का उपयोग: शालीन और सकारात्मक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए बातचीत के दौरान 'कृपया', 'धन्यवाद' और 'क्षमा करें' जैसे शब्दों का प्रयोग करना।
- ध्यान से सुनना: जब कोई दूसरा व्यक्ति बोल रहा हो, तो उसकी बात को ध्यान से सुनना और बीच में बात न काटना।
- दूसरों के समय का सम्मान: समय देकर किसी को इंतज़ार न करवाना।
- बारी का इंतज़ार करना: अपनी बारी का धैर्यपूर्वक इंतज़ार करना।
- दूसरों को जगह और सम्मान देना: बुजुर्गों, महिलाओं और ज़रूरतमंदों के लिए अपनी सीट छोड़कर उन्हें सीट देना।
- व्यक्तिगत सीमा का ध्यान: किसी के कमरे में प्रवेश करने से पहले दरवाज़ा खटखटाना और बिना पूछे किसी का फोन या निजी सामान न छेड़ना।
- दूसरों की मदद करना: जब भी संभव हो, ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहना और सहयोगात्मक व्यवहार अपनाना।
- अपने आस-पास कूड़ा कचरा नहीं फैलाना चाहिए।

बच्चों द्वारा शिष्टाचार का पालन करने से जीवन सार्थक बनता है और एक समाज का निर्माण करने में सहायक होता है।



आओ जानें किश जीव में कितने दाँत....

(जीवों में दाँत भोजन को चबाने और रक्षा के लिए होते हैं)

1. चूहा



16 दाँत होते हैं।

2. हाथी



26 दाँत होते हैं।

3. शेर



30 दाँत होते हैं।

4. मनुष्य



32 दाँत होते हैं।

5. बिल्ली



30 दाँत होते हैं।

6. बंदर



34 दाँत होते हैं।

7. घोड़ा



42 दाँत होते हैं।

8. मच्छर



47 दाँत होते हैं।

9. कुत्ता



44 दाँत होते हैं।

10. मगरमच्छ



80 दाँत होते हैं।



बच्चों के मुख से

मैं और मेरा भाई जयवर्धन हम दो साल से आ रहे हैं। मुझे पर्यावरण की प्रशिक्षिका और हस्तकला की प्रशिक्षिका बहुत ही अच्छी लगती हैं। मेरा भाई भी दो साल से मिले-जुले और एनिमल एवं फिश कॉनर की गतिविधि सीख रहा है। हमें रेलगाड़ी में सवारी करना बहुत अच्छा लगता है।

- मास्टर यशवर्धन - आयु 7+



मैं यहाँ दो साल से सितार और एनिमल फिश कॉनर सीख रहा हूँ। बाल भवन का परिसर बहुत ही सुन्दर है। यहाँ की हरियाली को देख किसी और बाग-बगीचे में जाने की चाहत नहीं रहती। प्रशिक्षक भी बहुत ही प्यार से बात करते हैं और बहुत अच्छे से समझाते हैं।

- मास्टर सक्षम - आयु 14+

मुझे कथक की प्रशिक्षिका नमीता मैम बहुत अच्छी लगती हैं। मैं कई वर्षों से उनसे नृत्य सीख रही हूँ। यहाँ पर आज़ादी से घूमना और रेलगाड़ी की यात्रा करना मुझे बहुत पसंद है इसीलिए मुझे बाल भवन बहुत प्यारा लगता है।

- कु. छवी - आयु 14+



मैं बाल भवन में तीन साल से भारतनाट्यम सीख रही हूँ। भारतनाट्यम नृत्य की मैम का व्यवहार मुझे सबसे अच्छा लगता है। मैं यहाँ एक आज़ाद पंछी की तरह महसूस करती हूँ और स्कूल की टैशनें भूल जाती हूँ।

- कु. वेदिका - आयु 11+



अभिभावकों के मुख से

बच्चे यहाँ बहुत खुश रहते हैं इनका घर जाने का बिल्कुल मन नहीं करता क्योंकि यहाँ का वातावरण बहुत शुद्ध है। बच्चों की रेलगाड़ी को देख बच्चे मोहित हो जाते हैं। मेरे बच्चे यहाँ चित्रकला और स्केटिंग सीखते हैं। यहाँ के प्रशिक्षकों का व्यवहार बहुत अच्छा है।

– श्रीमती प्रेमा



यहाँ की साफ-सफाई बहुत अच्छी है कम फीस में सीखने को ढेर सारी चीज़ें मिलती हैं। यहाँ के शौचालय बहुत साफ-सुथरे हैं। राष्ट्रीय बाल भवन में बच्चे आज़ाद पंछी की तरह शुद्ध वातावरण का आनन्द लेते हैं।

– श्रीमती श्रेया

मैं अपने बच्चों को चार साल से लेकर आ रही हूँ। बच्चे यहाँ आकर घर को भूल जाते हैं और कहते हैं कि माँ यहीं पर अपना एक घर बना लो। बाल भवन बहुत प्यारा है।

– श्रीमती ममता



मैं अपने बच्चे को आठ साल से लेकर आ रही हूँ। बच्चे यहाँ इलैक्ट्रॉनिक अनुभाग में पढ़कर बिजली के घरेलू काम सीखते हैं जिससे घर के काम का भी सुधार होता है। यहाँ का परिसर बच्चों के लिए तनाव मुक्त केन्द्र है।

- श्रीमती चम्पा



हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम
से संबंधित सामग्री को प्रकाशन
के रूप में तैयार करने में यदि
आपके कोई सुझाव हैं तो
उनका सहर्ष स्वागत है।



राष्ट्रीय बाल भवन
NATIONAL BAL BHAVAN